रीछों को भी आवश्यकता है संरक्षण की

डॉ. राम प्रताप गुप्ता

देश में बाघ, बर्फीले चीते, गैंडे आदि वन्य प्राणियों के संक्षरण के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं, इनके सुरक्षित आवास के लिए वनों को संरक्षित किया जा रहा है। बाघ आदि की तरह रीछों की कोई गणना तो नहीं हुई है, लेकिन उनकी संख्या में कमी के अनेक प्रमाण हैं। संख्या में कमी के बावजूद किसी का ध्यान इनके संक्षरण की ओर नहीं गया है। बल्कि मीडिया में रीछ और मानव के संघर्ष और घायल ग्रामीणों के समाचारों से जनमानस में इनकी प्रतिकूल छवि बनती रही है।

देश के 26 राज्यों के वनों में रीछ पाए जाते हैं, जबकि बाघ, गैंडे आदि कुछ राज्यों में ही पाए जाते हैं। वनों के घटते आकार तथा रीछों के आवासों के बढ़ते अतिक्रमण से रीछ असुरक्षित होते जा रहे हैं। सुरक्षित आवास के अभाव में ग्रामीणों के साथ इनके हिंसक संपर्क के मामले बढ़ते जा रहे हैं। जब रीछों को लगता है कि उनके आवास का अतिक्रमण हो रहा है तो हिंसक हो जाते हैं और निकटस्थ आबादियों पर आक्रमण कर देते हैं। ऐसे में ग्रामीणों द्वारा उनको मारने की घटनाएं होना स्वाभाविक है। सितम्बर, अक्टूबर और नवम्बर माह में फसलों के पकने के दौरान उन्हें खाने के लोभ में वे गांवों के निकट आ जाते हैं और ग्रामीणों के साथ उनके टकराव की घटनाएं होती हैं।

कई बार अंधविश्वासों के कारण भी ग्रामीणों द्वारा इनका शिकार होता है। एक मान्यता यह है कि बच्चों के गले में इनके नाखूनों की माला उन्हें बुरी नज़र से बचाती है। कई विश्वासों के कारण इनके अन्य अंगों की मांग होती है और लोग निर्दोष रीछों की हत्या करते हैं।

रीछों और मनुष्य के बीच संघर्ष के मामले जम्मू और काश्मीर में सर्वाधिक होते हैं। वहां के आंकड़े बताते हैं कि अस्पतालों में 10 प्रतिशत मरीज़ रीछों के शिकार लोग होते हैं। चूंकि हमले के दौरान रीछ अपने नाखूनों से सीधे मनुष्य के चेहरे पर हमला करता है और अपने तेज़ नाखूनों से अनेक घाव कर देता है, अतः उन घावों के भद्दे निशानों से मुक्ति पाने के लिए हमले के शिकार लोगों को प्लास्टिक सर्जरी तक करवानी पड़ती है। शेर काश्मीर संस्थान के प्लास्टिक सर्जरी विभाग में 60 प्रतिशत मामले रीछों के शिकार लोगों के ही आते हैं। पिछले कुछ वर्षों में इसी वजह से 500 लोगों की प्लास्टिक सर्जरी की गई है।

इन सब कारणों से जनमानस में रीछों के प्रति विकसित प्रतिकूल भावनाओं के कारण रीछों के संरक्षण की आवश्यकता के प्रति ग्रामीणों में अनुकूल वातावरण विकसित करना एक कठिन कार्य है।

इस हेतु हमारे पुराणों में वर्णित कुछ घटनाएं हमारी मदद कर सकती है। रीछों के राजा जाम्बवान ने लंका पर आक्रमण तथा उसे जीतने और सीता की मुक्ति में राम की मदद की थी। दीर्घायु जाम्बवान ने महाभारत के कौरवों और पाण्डवों के युद्ध में पाण्डवों की मदद की थी। फिर कुछ समय पूर्व तक रीछों को नचाकर जनता का, विशेष रूप से बच्चों का मनोरंजन करके देश के मदारी अपनी आजीविका अर्जित करते थे। अब देश में प्राणियों के प्रति निर्दयता के विरुद्ध कानून बन जाने से ऐसा करना संभव नहीं रहा है। इन उदाहरणों से रीछों के प्रति अनुकूल मानस बनाने में मदद मिल सकती है। साथ ही वनों के जिस भाग में रीछों का आवास होता है, उनमें लोग बहुत कम प्रवेश करें तथा आवश्यकता होने पर अकेले नहीं, समूह के साथ प्रवेश करें ताकि रीछों से सुरक्षित रह सकें। ***(स्रोत फीचर्स)***